

रश्मि सिंह

राँची, झारखण्ड

लघुकथा

आग का दरिया

"क्षमा ये मैं क्या सुन रही हूँ? तुमने बॉस के बेटे के खिलाफ पुलिस में कम्प्लेन की है?"
शिप्रा ने आश्चर्यमिश्रित घबराहट के साथ पूछा।
"हां शिप्रा! तुमने सही सुना। उस दिन बॉस के घर पार्टी में उसने जो घिनौनी हरकत करने की कोशिश की थी मेरे साथ उसके बाद मैं चुप नहीं रह सकती।" क्षमा ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"पर वो बॉस का बेटा है, तुम्हारी नौकरी तक जा सकती है।बॉस को भी जानती हो तुम...!"
शिप्रा ने चिंता व्यक्त की।

"जानती हूँ! पर सोचो जरा उसने मेरे आत्मसम्मान, मेरी अस्मिता को छलनी किया है।उसके घृणित चाल से मैं कैसे बचकर निकली हूँ ये मैं ही जानती हूँ। उन जैसों की हरकत पर चुप रहकर या हल्के में लेकर हम समाज में व्यभिचारियों, बलात्कारियों के हौंसले और बुलंद नहीं कर देते? जाने पहले उसने ऐसा कितनों के साथ किया होगा और आगे भी करता ही रहेगा अगर हम कड़ी आपत्ति न जताएँ या पुलिस कम्पलेन न करें...!" कहते हुए क्रोधावेग में हांफने लगी थी क्षमा।

"हाँ पर मुझे फिक्र हो रही तुम्हारी। ये एक्शन आग से खेलने जैसा ही है।" शिप्रा ने चिंतित हो कहा।

"किसी न किसी को तो हाथ जलाना ही पड़ेगा न शिप्रा वर्ना ऐसे कुत्सित मानसिकता वाले शेर बने घूमते रहेंगे और जाने कितनों की जिंदगी जिल्लत की आग में जलती रहेगी...!"
क्षमा ने दृढ़ता से कहा।

रुतबे की कीमत

"नमस्कार कुमार साहब! मैं अनुज का पिता रमेश बोल रहा हूँ। सोचा शादी की तैयारियों को लेकर आपसे सारी बातें कर लूँ...!" लड़के के पिता ने लड़की के पिता को फोन पर कहा।

"बिलकुल-बिलकुल कहिए न...!"
बेटी के पिता ने तनिक हड़बड़ाते हुए कहा।

"ऐसा है कि बच्चों की मर्जी के आगे तो हम बड़े नतमस्तक हो गये पर विवाह तो सामाजिक रुतबेऔर पारिवारिक मान्यताओं के अनुरूप ही होनी चाहिए न!" लड़के के पिता ने शेखी बघारी।
औ "जी... बिलकुल आप खुलकर अपनी बात कहें...!" लड़की के पिता की पेशानी पर बल दिखा तनिक।

"ऐसा है कि हमारे कई-एक मित्र और रिश्तेदार समाज के बेहद नामचीन लोग हैं हमारा रुतबा भी आपको पता ही है तो मैं चाहता हूँ कि शादी की भव्यता और बारातियों के मान-आदर, उनके स्टैंडर्ड के अनुरूप उपहार देकर उनकी ससम्मान विदाई का आप पूरा ध्यान रखें ताकि मेरी जगहँसाई न हो...!"
लड़के के पिता ने सहृदयता से फ़रमान सुना दिया।

"माफ़ कीजिएगा भाई साहब! मेरी बेटी और स्वयं मैं भी दहेज के किसी भी स्वरूप और अनावश्यक तड़क-भड़क के बिलकुल खिलाफ हूँ...!"
लड़की के पिता ने लड़के के पिता की उस 'छोटी सी डिमांड' पर होने वाले खर्च का मन ही मन हिसाब करते हुए संवाद का पटाक्षेप कर दिया।